सिख कैलेडंर आर्ट की यशस्वी गाथा

डॉ0 कविता सिंह

सहा0 प्रोफे0, (स्टेज–III), सरदार शोभा सिंह डिपार्टमेन्ट ऑफ फाईन आर्ट,पंजाबी युनिवर्सिटी, पटियाला

सारांश

कैलेंडर आर्ट की मुख्य रूप से परिभाषा हमारा ध्यान उन चित्रों की ओर आकर्शिक करती है जिन चित्रों का सृजन स्थानीय चित्रकारों द्वारा बड़े पैमाने पर किया जाता हो और जो चित्र लोकप्रिय भक्ति भाव व निष्ठा की अभिव्यक्ति करें और राष्ट्रीय एवं मानवीय भावों से भी ओत–प्रोत हों। सिख कैलेंडर आर्ट शैली की उत्पत्ति से भारतीय कैलेंडर आर्ट को नई समृद्धि प्रदान हुई क्योंकि सिख कैलेंडर आर्ट ने बहुत से तत्व व विषय भारतीय पुरातन ज्ञान तथा आध्यात्मिक विचारों को पूर्ण रूप से अपनाकर बखूबी ढंग से अपना एक अमूल्य अस्तित्व कायम किया है। सिख कैलेंडर आर्ट सिख इतिहास के गौरवशाली पृष्ठ, बेमिसाल वीरता, शौर्य, त्याग व बलिदान की प्रथा से ओत–प्रोत हैं जिनमें महान सिख गुरूओं के मानविय उपदेश और सिख गुरूओं के जीवन से सम्बंधित घटनाओं का भव्य चित्रण देखने को मिलता है और बहादुर योद्धाओं और शहीदों का गौरव जो अपने जीवन को सिख मूल्यों को कायम रखने के पवित्र कर्तव्य का प्रदर्षन करने के लिए निर्धारित किया था का बखूबी से गुणगान करता है। 'जन्म–साखियों' के आधार पर सिख कैलेंडर कला के आकर्षक और रौशनमय चित्रों के विकास के शुरूआती चरणों में बड़ी संख्या में अनेक चित्रकारों ने अपना अमूल्य योगदान दिया । इस प्रकार नई तकनीक व ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात सिख चित्रकारों ने यूरोपीय कला शैली में सिख विषयों पर चित्र बनाना आरंभ कर दिया तथा चारकोल, चॉक, क्रेयॉन, वॉटरकलर, टैम्पंरा, गौश और तैल्य रंग का प्रयोग करने में भी पूर्ण दक्षता प्राप्त कर ली। इसके इलावा वुड–कट, लिथोग्राफी और ज़ींक एचिंग की तकनीकों पर भी सिख चित्रकारों ने अपनी पकड़ मज़बूत कर ली। जिसके फल स्वरूप सिख कलाकारों द्वारा बनाए गए चित्रों की अनगिनत प्रतिकृतियाँ बनाने का प्रचार व चलन हुआ और वह आकर्षक चित्र जन–जन तक पहुँचे क्योंकि इन चित्रों की कीमत मूल रूप की कलाकृतियों से बेहद कम थी।

मुख्य-बिंदू :-*सिख कैलेंडर आर्ट, सिख गुरू, गुरू नानक देव, जन्म –साखी परंपराए, भित्ति चित्र, महाराजा रणजीत सिंह, लाहौर दरबार, सिख लघु चित्र, कांगड़ा कलम, प्रिंटिग –प्रेस, वुड–कट, लिथोग्राफी, सर जे. लॉकवुड किपलिंग ।*

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है:

डॉ0 कविता सिंह, ''सिख कैलेडंर आर्ट की यशस्वी गाथा'', शोध मंथन जून 2017, पेज सं0 34–41

http://anubooks.com/?page_id=2030

Article No.6(SM413)

प्रस्तावना

सिख कैलेंडर आर्ट की कला यात्रा का प्रारंभ सिखों के प्रथम गुरू– श्री गुरू नानक देव के जीवन काल पर आधारित घटनाओं, प्रकरण एवं उपख्यानों के चित्रमय वर्णन के आधार पर माना जाता है। तीन सदियों से पूर्व श्री गुरू नानक देव की प्रसिद्व गाथाओं का मूलरूप से चित्रण आरंभ हुआ जोकि सिखों की लोकप्रिय सिख कला की नींव रखने में सहायक बना। कैलेंडर आर्ट की मुख्य रूप से परिभाषा हमारा ध्यान उन चित्रों की ओर आकर्षित करती है जिन चित्रों का सृजन स्थानीय चित्रकारों द्वारा बड़े पैमाने पर किया जाता हो और जो चित्र लोकप्रिय भक्ति भाव व निष्ठा की अभिव्यक्ति करें और राष्ट्रीय एवं मानवीय भावों से भी ओत–प्रोत हों। कैलेंडर आर्ट के नमूनों में किसी राष्ट्र एवं क्षेत्र विशेष में प्रचलित देवी –देवताओं से जुड़ी धार्मिक मान्याओं, मिथकों व किंवदंतिओं का वर्णन या चित्रण आम तौर पर किया जाता है जिनके द्वारा उदात्त आदर्शों को मान्यता प्रदान होती है। इन विशयों के अतिरिक्त कैलेंडर आर्ट के चित्रों में आध्यात्मिक, दार्शनिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक विचारों एवं वीरता की गाथाओं का गुणगान किया जाता है। कैलेंडर आर्ट की शैली में वीर योद्धाओं और नायकों के सचित्र गाथागीत बहुत ही अनूठे और चित्र आकर्षित ढंग से पेश किए जाते हैं जिनका प्रभाव जन–जन के मानसिक पटल पर छाप छोड़ता है।[1] इन कैलेंडर आर्ट चित्रों के सूक्ष्म सार का केंद्र –बिंदू इन लुभावने चित्रों के विषय –वस्तु पर निर्भर करता है जिन्हें इस शैली के चित्रकार चुनते हैं और लगन और आस्था से चित्रित करते हैं व आध्यामिक, धार्मिक, साहित्यिक व ऐतिहासिक दृष्टिकोण को प्रकाशित करते हैं। भारतीय कैलेंडर आर्ट शैली आमतौर पर धार्मिक ज्ञान, पुण्यशीलता, मिथक विद्या, समृद्ध सांस्कृतिक परंपराएं एवं विरासत की धुरी के आस–पास घूमती है। असल में यह बहुत रोचक बात है कि भारतीय कैलेंडर आर्ट की विधा केवल इनमें से किसी एक विशेषता एवं लक्षणों पर निर्भर नहीं करती परंतु इन सब तत्वों के मिश्रण का सम्मिलन है।

यह सिखों तथा सब भारतीयों के लिए गर्व का विषय है कि सिख कैलेंडर आर्ट शैली की उत्पत्ति से भारतीय कैलेंडर आर्ट को नई समृद्धि प्रदान हुई क्योंकि सिख कैलेंडर आर्ट ने बहुत से तत्व व विषय भारतीय पुरातन ज्ञान तथा आध्यात्मिक विचारों को पूर्ण रूप से अपनाकर बखूबी ढंग से अपना एक अमूल्य अस्तित्व कायम किया है। सिख कैलेंडर आर्ट सिख इतिहास के गौरवशाली पृष्ठ, बेमिसाल वीरता, शौर्य, त्याग व बलिदान की प्रथा से ओत–प्रोत हैं जिनमें महान सिख गुरूओं के मानविय उपदेश और सिख गुरूओं के जीवन से सम्बंधित घटनाओं का भव्य चित्रण देखने को मिलता है और बहादुर योद्धाओं और शहीदों का गौरव जो अपने जीवन को सिख मूल्यों को कायम रखने के पवित्र कर्तव्य का प्रदर्शन करने के लिए निर्धारित किया था का बखूबी से गुणगान करता है। अत्याचारी मुगलों की दहशत, अमानविय असहनीयता, निर्दयता व बरबरता के हमलों के विरूद्ध एक सामूहिक युद्ध का प्रारंभ सिख योद्धाओं ने अनगिनत यातनाएँ सहते हुए अपने ऊपर झेला जिनका दिलदहलाने वाला चित्रण इन सिख कैलेंडरों में मुख्यता दिखाई देता है। इस प्रकार सिख कैलेंडर धार्मिंक पूजा की स्वतंत्रता और मानव जाति की स्वतंत्र भावना को श्रद्धांजलि देते हैं।

'जन्म–साखियों' के आधार पर सिख कैलेंडर कला के आकर्षक और रौशनमय चित्रों के विकास के शुरूआती चरणों में बड़ी संख्या में अनेक चित्रकारों ने अपना अमूल्य योगदान दिया जिनका स्वरूप हमें चित्रित पोथियों तथा सचित्र पांडुलिपियों में मिलता है। (1)**'जन्म –साखी'** की बुनियादी परंपराएं मुख्यता दो प्रकार की हैं– **'पुरातन जन्म –साखी'** एवं **'भाई बाला जन्म–साखी'।**[2] एक साथ और विस्तार में, लघु व विशाल दीवार चित्र एवं भित्ति चित्र ठाकुरद्धारों, मंदिरों, डेरों, सरायों और हवेलियों की दीवारों पर बनाने का चलन प्रचलित होने लगा जिनमें विस्तार रूप से सिख विषयों पर बनाए गए कलात्मक चित्र उज्जवल हुए।[3] (2) इन भित्ति चित्रों में अदभुत सौंदर्य आकर्षण, लावण्या व सजावटी तत्वों का मिश्रण दिखाई देता है। इस कला शैली के प्रथम–अन्वेषक मुख्यता उदासी, रामरय्या और सोढ़ी डेरों के संचालक थे जो की सिख धर्म की मुख्य धारा के अंश और प्रचारक माने जाते हैं।[4]

सिख कला शैली को खालसा राज के उदय से एक नया प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। महाराजा रणजीत सिंह जिन्हे **'शेर–ए–पंजाब '** के नाम से भी जाना जाता है सिख कला शैली के एक प्रमुख संरक्षक थे, जिन्होंने राजस्थान के लघु चित्रकारों का पूरे दिल से स्वागत किया और उन्हें अपने राज्य में शरण देकर उनके कला व्यवसाय को प्रफुल्लित करने में भरपूर सहायता प्रदान की। प्रथमतय यह लघु चित्रों के चितेरों ने पंजाब के पहाड़ी इलाकों मुख्यता कांगड़ा, गुलेर, चंबा, बसोहली, नूरपुर और कोटला में अपनी कार्यशालाएं स्थापित की और बाद में अनेक चित्रकार महाराजा रणजीत सिंह के लाहौर दरबार में अमूल्य संरक्षण प्राप्त करने के लिए उपस्थित हुए [5] जिसका सुखद परिणाम यह हुआ कि राजस्थानी और कांगड़ा लघुचित्र शैली के चित्रों के नाजुक और संवेदनशील सौंदर्य तत्व सिख लघु चित्रों में आत्मसात होने लगे। कांगड़ा कलम के संवेदनशील और महीन ब्रशवर्क जिनकी ख्याति कला जगत में सदियों से मानी जाती रही है की मुख्य विशेषताओं में मानव चित्र, व्यक्ति विशेष चित्र, खूबसूरत बेल–बूटे, पक्षी तथा जानवर, स्वन्पमय दिलकश भू–चित्रों में भ्रमण करते प्रतीत होते हैं जहाँ फूलों से लदी हुई झाडियाँ, पेड़–पौधे व कमल के फूलों से ढके तालाब व सरोवर हैं और आसमान में घने काले गरजते बादलों का शोर है जिनमें चमकती बिजली कभी–कभी कौंद जाती है। सफेद बगुले, तोते तथा अनेको अनेक चिडियाँ षांतीयमय वातावरण में डाल–डाल पर फुदकते नज़र आते हैं। इन चित्रों में पहाड़ी तथा राजस्थानी वास्तु–कला और दरबारी दृश्यों का सुंदर चित्रण है जिसको सिख कला शैली ने खुली बांहों से स्वीकारा और एक अदभुत शैली का निर्माण हुआ। इस सुमेल से सिख धार्मिक विषय व विचारों तथा सिख रईस–वर्ग और नवाबी उमरा की जीवन शैली का चित्रण भी बेमिसाल महीनता तथा कलात्मक ढंग से पेश किया जाने लगा। (3) इन चित्रों में राजस्थानी एवं पहाड़ी चित्रों की सूक्ष्म विधि व प्रभाव की झलक साफ़ नज़र आती है। इन्ही सजावटी तथा कलात्मक तत्वों के सुमेल से सिख कला शैली ने बेजोड़ समृद्धता पाई।

महाराजा रणजीत सिंह के दरबार की भव्यता एवं ऐश्वर्य ने अनेको–अनेक यूरोपीय अतिथियों, चित्रकारों, यात्रियों, जनरलों, इतिहासकारों व व्यापारियों को अपनी ओर आर्कषित किया। यूरोपीय चित्रकारों के आगमन से यूरोपीय कला शैली का प्रवेश लाहौर दरबार के माध्यम

से सिख कला शैली तक पहुँचा।[6] विख्यात तथा निश्ठावान यूरोपीय चित्रकार जिन्हे महाराजा रणजीत सिंह का पूर्ण समर्थन व उदार संरक्षण प्राप्त हुआ उनमें ओगस्त शौफत, एमिली ईडन, डब्लयू.जी. ओसबोर्न, बेरन हयूगल, कैप्टन गोलड़िंगम, विलियम कारपेंटर, सी.एस. हारडिंग, जर्मन पेंटर वेन ओरलिष, जी.टी. विगन और रूसी प्रींस एलेक्सिस सोलटिकौफ प्रमुख थे।

यूरोपीय कला शैली व तकनीक जिसमें कैनवास पर तैल्य चित्र, पूर्ण तीन–आयामी दृष्टिकोण तथा दृश्य–यथार्थवाद की निपुणता की झलक दिखाई देती है को सिख कला पारखियों एवं विशेषज्ञयों ने बहुत सराहना की तथा कलात्मक गुणों को सिख चित्रकला में खुले मन से अपनाकर इन्हें सिख कला शैली प्रमुख स्थान दिया। बड़े पैमाने पर यूरोपीय चित्रकारों ने विशाल कैनवास पर तैल्य चित्रों की सृजना की जिनमें लाहौर दरबार की वैभवता तथा समृद्धता के साथ–साथ महाराजा रणजीत सिंह व उनके शाही परिवार के सदस्यों तथा दरबारियों, मंत्रियों, सेनापतियों और रईस व विशिष्ट व्यक्तियों के चित्र शामिल हैं। (4) चूंकि इन चित्रों की मांग में कई गुना बढ़ोतरी हुई, यूरोपीय चित्रकारों ने बहुत से सिख चित्रकारों को अपने सहायक के तौर पर काम करने के लिए रखा। जबकि इन सिख चित्रकारों का काम कहीं पंखा चलाना या पानी का प्रबंध करना था पर इस पर उनकी प्रषंसा करनी होगी कि उन्होंने यूरोपीय चित्रकारों की कला तकनीक की बारीकियाँ सिर्फ देखकर ही सीख लीं तथा उनमें पूर्ण निपूणता भी हासिल कर ली। इस प्रकार नई तकनीक व ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात सिख चित्रकारों ने यूरोपीय कला शैली में सिख विषयों पर चित्र बनाना आरंभ कर दिया तथा चारकोल, चॉक, क्रेयॉन, वॉटरकलर, टैम्पंरा, गौश और तैल्य रंग का प्रयोग करने में भी पूर्ण दक्षता प्राप्त कर ली।

इसके इलावा वुड–कट, लिथोग्राफी और ज़ींक एचिंग की तकनीकों पर भी सिख चित्रकारों ने अपनी पकड़ मज़बूत कर ली। जिसके फल स्वरूप सिख कलाकारों द्वारा बनाए गए चित्रों की अनगिनत प्रतिकृतियाँ बनाने का प्रचार व चलन हुआ और वह आकर्षक चित्र जन–जन तक पहुँचे क्योंकि इन चित्रों की कीमत मूल रूप की कलाकर्षतियों से बेहद कम थी। इस प्रकार यूरोपीयों द्वारा लाई गई बहुत सी प्रिंटिग –प्रेसों की स्थापना मुख्यता पंजाब के बड़े नगर जैसे लाहौर और अमृतसर में की गई जहाँ के लोग कलात्मक। साहित्यिक तथा व्यवसायिक तौर से समृद्ध थे तथा यहाँ छपाई व प्रकाशन का काम तेज़ गति से चलने लगा और सिख कला शैली के चित्रों की उपलब्धता बड़ने लगी।

आम और खास लोगों ने सिख कला की प्रतिकृतियों में गहरी रूची दिखाई जिस कारण सिख चित्रकारों ने बहुताद में इन रंगीन व सुंदर चित्रों एवं कैलेंडरों को छपवाने का काम अपने हाथ में लिया जिसका विस्तार दिन–प्रतिदिन बढ़ता ही गया। यह सिख कैलेंडर इतने प्रसिद्ध हुए की लोगों ने इनको अपने घरों व व्यवसाय केन्द्रों और दुकानों की दीवारों पर सजाना शुरू कर दिया। यह सिख कैलेंडर जन मानस की आस्था का चिन्ह बने तथा यहाँ तक की लोगों ने इन्हें अपने पूजा–स्थलों पर मुख्य स्थान देना आरंभ किया और इन्हें पूजने लगे क्योंकि इनमें दर्शाई गई आध्यात्मिकता तथा मानव कल्याण के विषय बहुत मन लुभावने थे जो इंसान को उच्च मूल्यों की प्राप्ती के लिए प्रेरित करते थे। (5) सिख धर्म के मूल्य जैसे सार्वभौम भाईचारा, निस्वार्थ सेवा,

परस्पर प्यार, शांति, एक भगवान में आस्था, मेहनत, धार्मिक सहिष्णुता, धर्म, जाति, नस्ल व रंग भेद के विरूद्ध खड़े होना तथा अमीर–गरीब के भेद त्याग कर मिल बांटकर खाना व सहायता करना प्रमुख थे जिन्हें सिखों के प्रथम गुरू–श्री गुरू नानक देव जी ने सिखाया। (6) अन्य विषय जो जन मानस की पटल पर छाप छोड़ते हैं उनमें प्रमुखता त्याग और बलिदान की महत्वता तथा अपने जीवन को मानवता के लिए समर्पित करने के आर्दश सर्वप्रिय हैं। सिख कैलेंडर आर्ट में जुल्म व उत्पीड़न के विरूद्ध लड़े गए धर्मयुद्ध का गौरवशाली चित्रमय वर्णन मिलता है (7, 8) जिसमें सिख शूरवीरों की बेमिसाल वीरता को श्रद्धांजलि दी गई है। (9) स्वभाविक ही है कि इन चित्रों का प्रभाव लोगों के दिल और दिमाग पर गहरी छाप छोड़ जाता है।

इसके अतिरिक्त सिख गुरूओं के व्यक्ति –चित्र तथा सिख इतिहास के दृश्य अतयंत कलात्मक दक्षता एवं उच्च स्तर की योजना विधि द्वारा सिख चित्रकारों ने पूर्ण आस्था व निष्ठा से अपनी तुलिका से उकेरे। केहर सिंह, कपूर सिंह, किशन सिंह, बिशन सिंह, सरदूल सिंह, बावा, पूरन सिंह, अमीर सिंह, अरूर सिंह, गणेश सिंह, अज़ीम, जीवन लाल, लाहौरा सिंह, मल्ला राम, श्री राम लाल, हुसैन बक्श और अल्लाह बक्श प्रथम श्रेणी के महान चित्रकार थे जिन्होंने अपना पूर्ण जीवन सिख कैलेंडर आर्ट की विधा को समर्पण किया और बहुत से अनूठे और प्रभावशाली चित्रों का निर्माण किया।[7]

इनके इलावा जिन चित्रकारों ने सिख कैलेंडर आर्ट में अपना विशाल, अविस्मरणीय और स्मारकीय योगदान दिया उनमें शोभा सिंह, एस.जी. ठाकुर सिंह, जी.एस. सोहन सिंह, कृपाल सिंह, जसवंत सिंह, मास्टर गुरूदित सिंह, त्रिलोक सिंह चित्रकार, अमोलक सिंह, बोधराज, मेहर सिंह, देवेन्द्र सिंह और जरनैल सिंह प्रमुख है जिन्होंने अपनी–अपनी शैली में अतयंत ही खूबसूरत तथा लुभावने ढंग से चित्र बनाए और सिख कैलेंडर आर्ट को एक नई पहचान दिलाई। खास तौर पर संत चित्रकार सरदार षोभा सिंह ने गुरू नानक (10) एवं गुरू गोबिन्द सिंह (11) के प्रतिष्ठित व्यक्ति –चित्रों का निर्माण किया जो उनकी मूल कलाकृतियों में देखने को मिलता है। यह चित्र उन्होंने अतयंत भक्ति –भाव व आध्यात्मिकता से विभोर होकर उकेरे तथा कहा जाता है की आप कई दिन तक अपनी पहाड़ी गुफा में बैठकर चिन्तन करते थे तथा तब जो गुरू दर्शन उनके मन मे उभरता था उसे वह एकांत में बैठकर चित्रित करते। यह सिख कैलेंडर सबसे ज्यादा मशहूर हुए और देश–विदेश में बसे सिख व पंजाबी प्रवासी भारतीयों के घर की दीवारों की शोभा बढ़ाने लगे। इन चित्रों की प्रतिकृतियाँ लाखों की संख्या में बनी। यह सिख कैलेंडर नई पीडी के पंजाब व सिख जो भारत से हज़ारों मील दूर जा बसे है उनको अपने सिख धर्म के इतिहास, कला, सांस्कृतिक लोकाचार एवं अमूल्य वीरासत की पहचान कराते हुए गर्व से भर देते हैं। सिख कैलेंडर आर्ट के प्रमुख संरक्षक शिरोमणि गुरूद्वारा प्रबंधक समिति, अमृतसर; धर्म प्रचार समिति, नई दिल्ली ; दिल्ली सिख गुरूद्धारा प्रबंधन समिति ; पंजाब एण्ड सिंद्व बैंक, नई दिल्ली ; बैंक ऑफ पंजाब, नई दिल्ली; मार्कफेड ; पी.एन.बी. फाइनैंस तथा अन्य सिख संस्थान जैसे सिख फांउडेशन, मीरी–पीरी फांउडेशन और वह संग्रहालय जिनका निर्माण ऐहिसासिक गुरूद्धारों में किया जाता है वह सिख कैलेंडर आर्ट के प्रमुख स्त्रोत हैं।

सिख कैलेंडर आर्ट के अतयंत ख़ास नमूने जो वुड–कट अथवा लिथोग्राफी तकनीक में छापे गए, उनका अमूल्य संग्रह **'विक्टोरिया और अल्बर्ट संग्रहालय, लंदन'** में सुशोभित है जिनका संकलन लाहौर संग्रहालय के क्यूरेटर–सर जे. लॉकवुड किपलिंग द्वारा किया गया। आप मशहूर कवि **'रूडयार्ड किपलिंग'** के पिता थे। सिख कैलेंडर आर्ट का भविष्य बहुत उज्जवल है क्योंकि यह अपने आप में सिख इतिहास, दर्शन व आध्यात्मिकता के अमूल्य गुण समेटे हुए हैं और नई पीड़ी के सैंकड़ों चित्रकार इस प्रथा में नए आयामों के साथ कार्यशील हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. ***ओबेरॉय, पेट्रीसिया ;*** *2006, फ्रीडम् एण्ड डेस्टिनी : जैन्डर, फैमिली एण्ड पोपुलर कल्चर इन इंडिया, ऑक्सफ़ोर्ड युनिवर्सिटी प्रैस, नई दिल्ली, पष्ठ–11*

2. ***मैकलेओड, डब्लयू.एच ;*** *1991, पोपुलर सिख आर्ट, ऑक्सफ़ोर्ड युनिवर्सिटी प्रैस, न्यू योक, पष्ठ–4*

3. ***दलजीत, डॉ0 ;*** *2004, द सिख हेरिटेज– अ सर्च फौर टोटैलिटी, प्रकाष बुक डिपो, नई दिल्ली, पष्ठ –132*

4. ***फौजा सिंह, डॉ0 ;*** *मार्च 1969, अ स्टडी ऑफ द पेटिंगज़ ऑफ गुरू नानक, पंजाब हिस्ट्री कांफ्रेंस प्रसीडिंगज़, 4th अधिवेषन, पटियाला, पष्ठ–131*

5. *वही, पष्ठ–134*

6. ***अजाजुद्दीन, एफ.एस.;*** *1979, सिख पोर्ट्रट बॉय यूरोपीयन आर्टिस्ट, ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली, पष्ठ–13*

7. ***आर्यन, के.सी.;*** *1975, पंजाब पेंटिंग, पंजाबी युनिवर्सिटी, पटियाला, पष्ठ–17*

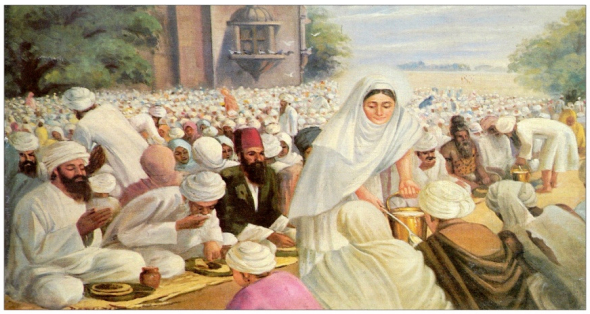

SikhMuseum.com